CBKG-004

भारतीय कालगणना में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम

(CBKG)

सत्रीय कार्य

(जनवरी, 2026 एवं जुलाई, 2026 सत्र के लिये)

CBKG-004 कालगणना और ऐतिहासिक कालक्रम

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

कालगणना और ऐतिहासिक कालक्रम: CBKG-004

सत्रीय कार्य (2026-27)

पाठ्यक्रम कोड : CBKG-004/2026-27

प्रिय छात्रो/छात्राओ,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिये 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये:

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिये।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता :.....

दिनाँक :.....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :.....

सत्रीय कार्य कोड :.....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :.....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्पणी परक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जनवरी, 2026 सत्र के लिए : 30 अप्रैल, 2026

जुलाई, 2026 सत्र के लिए : 30 नवम्बर, 2026

सत्रीय कार्य : CBKG-004

कालगणना और ऐतिहासिक कालक्रम

सत्रीय कार्य – CBKG-004/TMA/2026-27 पूर्णांक - 100

नोट – **इस सत्रीय कार्य में दिए गए सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।**

1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक लगभग 500 शब्दों में) दीजिए । **20 × 4 = 80**

   i) सूर्यसिद्धांत, सिद्धांत शिरोमणि और आर्यभटीयम् में प्रस्तुत कालगणना की पद्धतियों की तुलना कीजिए। यह स्पष्ट कीजिए कि इन ग्रंथों में खगोलीय अवलोकनों और गणित का क्या योगदान है।

   ii) वृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका में वर्णित कालगणना पद्धतियों का विश्लेषण कीजिए। इसमें किस प्रकार सूर्य और ग्रहों के चक्र को समय मापन में उपयोग किया गया, इसे उदाहरण सहित समझाइए।

   iii) प्लेट टैक्टोनिक्स सिद्धांत का संक्षिप्त परिचय दीजिए। इसके आधार पर पृथ्वी के भूगर्भीय युगों और समय गणना में योगदान बताइए। साथ ही, इस सिद्धांत की प्रमुख सीमाएँ/limitations और विवादों पर चर्चा कीजिए।

   iv) सृष्टि संवत्, कलि संवत् और युधिष्ठिर संवत् के कालक्रम को स्पष्ट कीजिए। यह बताइए कि इन संवतों का ऐतिहासिक घटनाओं और भारतीय समाज के समयबोध पर क्या प्रभाव पड़ा।

   v) सप्तर्षि, तिष्य, बार्हस्पत्य, विक्रमी और शक संवतों के संदर्भ में रामायण का काल निर्धारण कीजिए।

   vi) पुरातत्त्व आधारित काल निर्धारण की सीमाएँ और आलोचनात्मक दृष्टि से संभावित समस्याएँ वर्णित कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए । **10× 2 = 20**

   i. भारतीय इतिहास और कालगणना के बीच संबंध स्पष्ट कीजिए। विशेष रूप से सृष्टि संवत् का इतिहास के साथ क्या सम्बन्ध है, इसे समझाइए।

   ii. महाभारत के काल और उससे जुड़े संवतों का इतिहास स्पष्ट कीजिए। इसे भारतीय ऐतिहासिक घटनाओं से जोड़कर उदाहरण दीजिए।

   iii. विक्रम संवत् का ऐतिहासिक महत्व और इसका प्रयोग भारतीय इतिहास में कैसे हुआ, इसे समझाइए।

   iv. भास्कराचार्य के प्रमुख ग्रंथों का उल्लेख कीजिए और उनकी कालगणना/खगोलशास्त्र में योगदान संक्षेप में बताइए।